पढ़ो कहानी

चांद पर खुली सितारों भरी खिड़की

अनाया को रात में चांद देखना बहुत पसंद था. हर रात सोने से पहले वह अपनी खिड़की के पास बैठती और चांद से बातें करती. कभी वह उसे अपनी स्कूल की बातें बताती, तो कभी पूछती कि चांद पर आखिर कौन रहता है.

एक रात अनाया को चांद पर कुछ अजीब दिखाई दिया. उसे लगा, जैसे चांद के एक कोने में छोटी-सी खिड़की खुली हो. उसने आंखें मलीं और फिर देखा. खिड़की अब भी वहां थी. उसके भीतर हल्की पीली रोशनी चमक रही थी.

'अरे! यह खिड़की किसकी है? अनाया बुदबुदाई.

उस रात वह देर तक सो नहीं पाई. अगले दिन उसने एक कागज पर लिखा, 'चांद जी, आपकी खिड़की के पीछे कौन रहता है?

उसने कागज को मोड़कर अपनी खिड़की पर रख दिया और मन ही मन सोचा कि शायद चांद तक उसका सवाल पहुंच जाए.

अगली रात जब वह खिड़की के पास आई, तो उसे वहां एक चमकता हुआ कागज दिखाई दिया. उस पर लिखा था, 'मैं हूं चंदू. इस खिड़की के पीछे एक छोटा-सा पुस्तकालय है. यहां उन सवालों की किताबें रखी हैं, जिनके जवाब अभी किसी को नहीं मिले. अनाया खुशी से उछल पड़ी. अब तो उसके पास पूछने के लिए ढेर सारे सवाल थे.

अगली रात उसने पूछा, 'आसमान नीला क्यों दिखाई देता है? जवाब आया, 'क्योंकि सूरज की रोशनी हवा में बिखरती है और नीली रोशनी हमारी आंखों तक ज्यादा पहुंचती है. फिर उसने पूछा, 'क्या कभी इंसान दूसरे ग्रहों पर भी घर बना पाएगा?

इस बार जवाब था, 'शायद! लेकिन इसके लिए तुम्हारे जैसे जिज्ञासु बच्चों को बड़े होकर नए रास्ते खोजने होंगे.

अब अनाया रोज एक नया सवाल लिखती. कभी विज्ञान से जुड़ा, कभी समुद्र के रहस्यों पर और कभी सपनों के बारे में. हर सवाल के साथ उसका उत्साह बढ़ता जाता. सवालों को पूछना, नयी-नयी बातों को जानना अनाया के लिए एक रह्सयमई दुनिया को खोजने जैसा था. जिसे पूछकर जानकर हर पल उसका उत्साह बढ़ता जा रहा था. वह अपनी इस नयी सवालों की दुनिया में खुद को बहुत खुश महसूस कर रही थी. पर ऐसे में ही एक रात अचानक

उसने लिखा, 'चंदू, क्या तुम्हारे पास मेरे हर सवाल का जवाब है? इस बार जवाब कुछ अलग था. 'नहीं अनाया! कुछ सवालों के जवाब मुझे भी नहीं पता. लेकिन जब तुम खुद उन्हें खोजने निकलोगी, तब शायद तुम्हें नई दुनिया मिल जाएगी. अनाया कुछ देर तक चांद को देखती रही. फिर उसने अपनी विज्ञान की पुस्तक उठाई और अगले दिन स्कूल में पूछे जाने वाले सवालों की सूची बनाने लगी.

अब चांद की खिड़की उसे पहले से भी ज्यादा चमकदार दिखाई दे रही थी.

सीख

सवाल पूछने से नई बातें जानने और सीखने के रास्ते खुलते हैं. इसलिए कभी भी अपनी जिज्ञासा को कम नहीं होने देना चाहिए. सवालों को पूछने का उत्साह इंसान को नए रास्ते पर ले जाने के लिए हर वक़्त प्रेरित करता है. इसलिए सवालों को पूछने की सीख, कुछ नया करने की सीख आदमी के अंदर हमेशा रहनी ही चाहिए

बिंदु मिलाओ

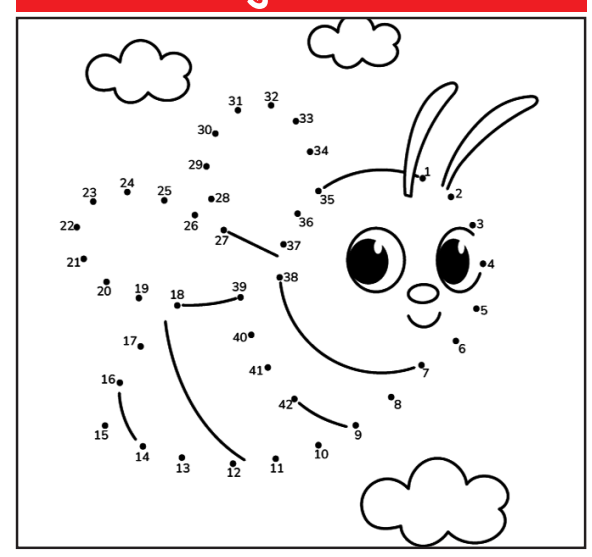

रंग भरो

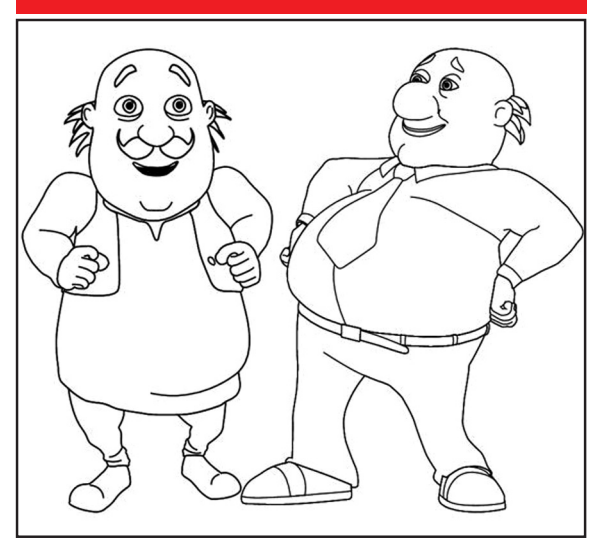

प्रेरणा

राष्ट्रपति भवन में ठहरे जब मेहमान...

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जब राष्ट्रपति थे, तब एक बार उनके परिवार के लगभग पचास सदस्य दिल्ली आए. उनमें उनके सबसे बड़े भाई भी थे, जो उम्र के नौवें दशक में थे. सब राष्ट्रपति भवन में ठहरे और कई दिन रुके. कलाम साहब ने सबको दिल्ली घुमाने का इंतज़ाम भी करवाया.

उनके सचिव रहे पी.एम. नायर ने अपनी किताब में इस घटना का ज़िक्र किया है. आमतौर पर ऐसे अवसर पर कोई नहीं सोचता कि हिसाब कैसे रखा जाए. पर कलाम साहब ने पहले ही दिन साफ़ निर्देश दे दिए कि रिश्तेदारों के ठहरने, खाने और घूमने का हर खर्च वे अपनी जेब से देंगे. उन्होंने कहा कि सरकारी खर्च में

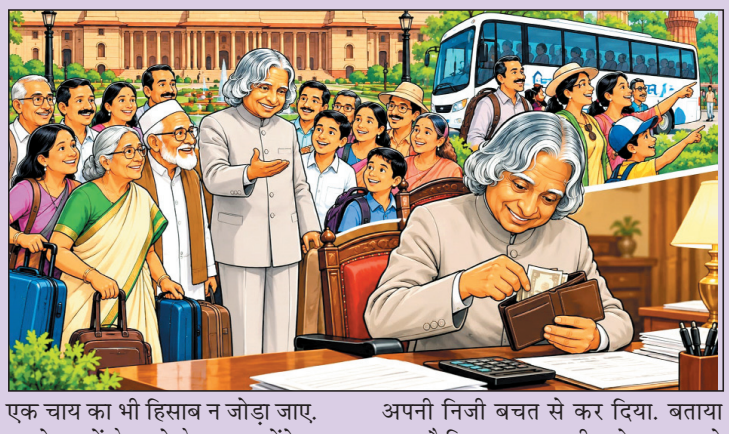

एक चाय का भी हिसाब न जोड़ा जाए.

मेहमानों के जाने के बाद उन्होंने एक-एक रकम जोड़वाई और पूरा भुगतान अपनी निजी बचत से कर दिया. बताया जाता है कि यह रकम करीब दो लाख रुपये थी. इसके बारे में उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया और न ही इसे बड़ी बात माना. उनके लिए यह सहज बात थी.

वे कहते थे कि राष्ट्रपति भवन देश की जनता का है, उनके घर-परिवार का नहीं. उनके पास दौलत नहीं थी. वे अपनी किताबों की रॉयल्टी और वेतन से ही गुज़ारा करते थे, पर नैतिकता के मामले में वे बहुत अमीर थे.

जीवन की सीख

सार्वजनिक पद पर बैठकर निजी और सरकारी खर्च के बीच साफ़ रेखा खींचना ही सच्चे नेतृत्व की पहचान है.रिश्तेदारी की सीमा से परे अपने स्वहित से परे नियमों का सही पालन ही असल नेतृत्व का गुण है.

अमर जेलीफिश: जो बूढ़ी होकर फिर से बन जाती है बच्चा

रोचक तथ्य

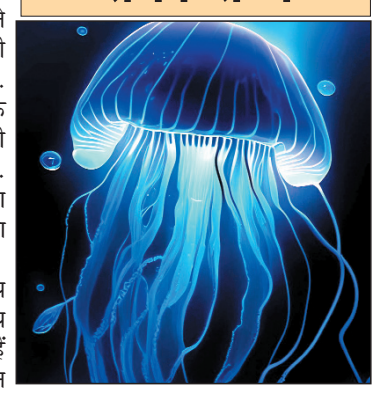

समुद्र में पाई जाने वाली टुरिटोप्सिस डोहर्नी जेलीफिश अपनी उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को उलटने की अनोखी क्षमता रखती है. संकट के समय यह वयस्क अवस्था से वापस शुरुआती अवस्था में लौट सकती है. इसी खासियत के कारण इसे अमर जेलीफिश कहा जाता है.

इंसान हो या कोई अन्य जीव, उम्र बढ़ने के साथ शरीर में बदलाव आते हैं और एक दिन जीवन समाप्त हो जाता है. लेकिन समुद्री दुनिया में एक ऐसा छोटा जीव भी मौजूद है, जो इस सामान्य नियम को चुनौती देता नजर आता है. यह जीव है टुरिटोप्सिस डोहर्नी जिसे आमतौर पर अमर जेलीफिश के नाम से जाना जाता है. इस जेलीफिश की सबसे खास बात यह है कि कुछ परिस्थितियों में अपने वयस्क शरीर को फिर से शुरुआती अवस्था में बदल सकती है.

जहां अधिकांश जीवों का जीवन जन्म से वयस्क होने और फिर बुढ़ापे की ओर बढ़ता है, वहीं यह जेलीफिश अपने जीवनचक्र को पीछे की दिशा में ले जाने की क्षमता रखती है. जब जेलीफिश को शारीरिक चोट लगती है, भोजन की कमी होती है या पर्यावरणीय परिस्थितियां प्रतिकूल हो जाती हैं, तो यह अपनी वयस्क अवस्था से वापस पॉलिप अवस्था में लौट सकती है.

भूल भुलैया

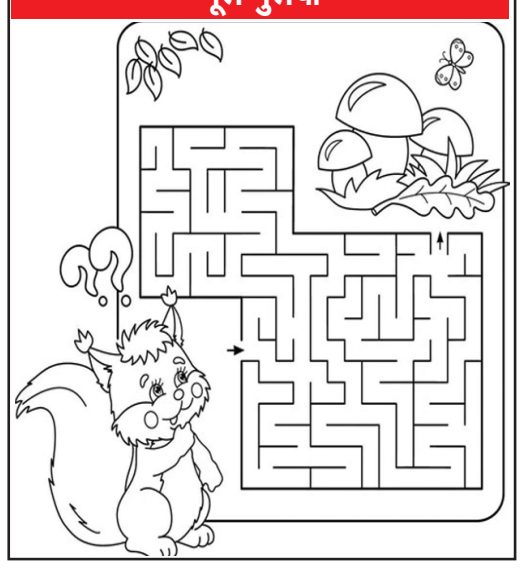

जानकारी

गायों के भी होते हैं पक्के दोस्त

बिछड़ने पर बढ़ जाती है धड़कन

दोस्ती का रिश्ता केवल इंसानों तक सीमित नहीं है. जानवरों की दुनिया में भी लगाव, अपनापन और साथ निभाने जैसे भाव देखने को मिलते हैं. गायों को अक्सर शांत और सीधे स्वभाव वाला पशु माना जाता है, लेकिन उनके सामाजिक व्यवहार से जुड़ी कई बातें हैरान कर सकती हैं. गायें अपने झुंड के सभी सदस्यों के साथ एक जैसा व्यवहार नहीं करतीं. कुछ गायों के साथ उनका विशेष लगाव विकसित हो जाता है.

ऐसे साथी के पास रहने पर वे अधिक सहज महसूस कर सकती हैं, जबकि उससे अलग होने पर उनमें तनाव के संकेत दिखाई दे सकते हैं. गायें सामाजिक पशु हैं और आमतौर पर झुंड में रहना पसंद करती हैं. झुंड में रहते हुए वे दूसरे पशुओं के साथ अपने संबंध विकसित करती हैं. इनमें से कुछ के साथ उनका जुड़ाव अधिक गहरा हो सकता है. वे अपने पसंदीदा साथी के आसपास रहना, साथ चरना और एक-दूसरे के पास आराम करना पसंद करती हैं. गायें भी अपने पसंदीदा साथियों के पास शांत रह सकती हैं.

पसंदीदा साथी के साथ रहने पर गाय अपेक्षाकृत शांत रह सकती है. इसके विपरीत, अपरिचित वातावरण या अपने परिचित साथी से अलग होने पर उसके तनाव का स्तर बढ़ सकता है.

कविता

क्या करते हैं भगवान जी?

पापा जरा बताना मुझको, क्या करते भगवान जी?
दूध कहां से लाते हैं वे, क्या पाली है भैंस जी?
रोटी कहां पकाते हैं वे, क्या ले ली है गैस जी?
कहां सिलेंडर भरवाते हैं, कहां उगाते धान जी?
क्या उनके घर में भी बच्चे, करते रहते शोर जी?
क्या उनकी बातें सुनकर वे, हो जाते हैं बोर जी?
दफ्तर में जाते हैं वे, या खोली कहीं दुकान जी?
क्या ऊपर भी धुआं- धुआं है, चलती है बस कार जी?
लाउड स्पीकर शाम सवेरे, बजते हैं बेकार जी?
कहीं किराए पर रहते, या अपना बना मकान जी?

कवि : किशोरकुमार कौशल

बूझो तो जानें

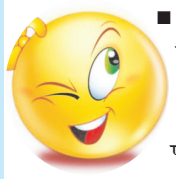

- हरी झंडी लाल कमान, तोबा तोबा करे इंसान
  उत्तर - मिर्ची
- नाक पर चढ़कर कान पकड़कर, लोगों को है पढ़ाती
  उत्तर - चश्मा
- कमर बांधे घर में रहता, सुबह-शाम जरूरत है पड़ती बताओ क्या?
  उत्तर - झाड़ू
- काला मुंह लाल शरीर, कागज़ को वो खा जाता रोज़ शाम को पेट फाड़कर कोई उन्हें ले जाता
  उत्तर - लेटर बॉक्स
- काला घोडा सफ़ेद की सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी
  उत्तर - तवा और रोटी
- जितना निकालो, उतना ही बढ़ता हूं सब मुझसे डरते हैं, पर मैं कुछ नहीं करता मैं क्या हूं?
  उत्तर- अंधेरा

हंसी-ठिठोली

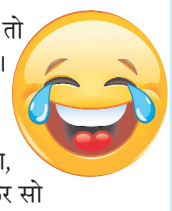

- पापा- तुम्हारा अलार्म तो दूसरे कमरे में बज रहा है। उसे यहां क्यों नहीं रखते?
  अवनि- यहां रखा था, लेकिन मैं बंद करके फिर सो जाती थी
  पापा- दूसरे कमरे में रखने से उठ जाती हो?
  अवनि- हां, पहले अलार्म बजता है, फिर आप आवाज लगाते हैं. और दूसरी आवाज बंद करने का बटन अभी तक नहीं मिला
- दर्जी- वर्दी थोड़ी बड़ी रखूं ? बच्चा अभी बढ़ रहा है
  मां - हां, ऐसी बनाइए कि अगले साल भी काम आए
  गिरीश- तो अगले साल ही पहनकर स्कूल जाऊं ?
  मां- इस साल क्या करोगे?
  गिरीश- वर्दी तैयार होने का इंतजार

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

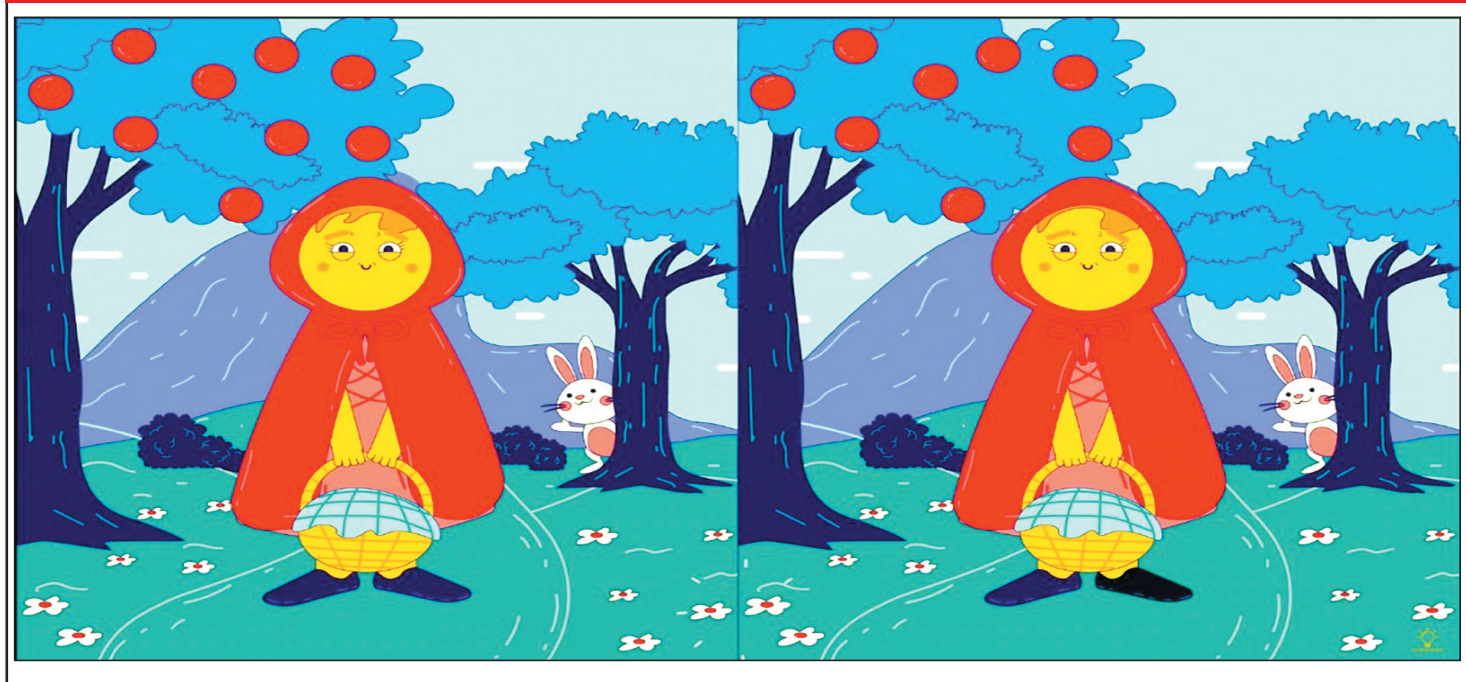

उत्तर- 1.नीचे का कलर, 2. गुड़िया के बालों में अंतर, 3. फलों की संख्या, 4. बादल में फर्क, 5. फूलों की संख्या